

सूरह जुखरुफ़ - 43

سُورَةُ الزَّخْرَفِ

सूरह जुखरुफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 89 आयतें हैं।

- इस की आयत 35 में ((जुखरुफ़)) शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। जिस का अर्थ है: सोना-शोभा।
- इस की आरंभिक आयतें कुर्आन के लाभ और उस की बड़ाई को उजागर करती हैं। फिर उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से अल्लाह के अकेले पूज्य होने का विश्वास होता है। फिर आयत 15 से 25 तक फ़रिश्तों को अल्लाह का साझी बनाने को अनुचित बताया गया है। फिर आयत 26 से 33 तक इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मूर्तियों से विरक्त होने के एलान को प्रस्तुत किया गया है। और बताया गया है कि मक्कावासी जो उन्हीं के वंश से हैं वे शिर्क तथा मूर्तियों की पूजा के पक्षपाती हो गये हैं। और अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस लिये विरोधी बन गये हैं कि आप एक अल्लाह के पूज्य होने का आमंत्रण दे रहे हैं।
- आयत 34 से 45 तक तनिक संसारिक लाभ के लिये परलोक तथा बह्वी और रिसालत के इन्कार कर देने के परिणाम को बताया गया है। और फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) की कुछ दशाओं का वर्णन किया गया है। जिस से यह बात सामने आती है कि वह भी तौहीद का प्रचार करते थे और उन के विरोधियों ने अपना परिणाम देख लिया।
- अन्तिम आयतों में विरोधियों के लिये चेतावनी तथा सदाचारियों के लिये शुभसूचना के साथ अपराधियों को उन के दुष्परिणाम से सावधान, और कुछ संदेहों को दूर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

2. शपथ है प्रत्यक्ष (खुली) पुस्तक की!
3. इसे हम ने बनाया है अर्बी कुर्आन ताकि वह इसे समझ सकें।
4. तथा वह मूल पुस्तक^[1] में है हमारे पास, बड़ा उच्च तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।
5. तो क्या हम फेर दें इस शिक्षा को तुम से इसलिये कि तुम उल्लंघनकारी लोग हो?
6. तथा हम ने भेजे हैं बहुत से नबी (गुज़री हुयी) जातियों में।
7. और नहीं आता रहा उन के पास कोई नबी परन्तु वह उस के साथ उपहास करते रहे।
8. तो हम ने विनाश कर दिया इन से^[2] अधिक शक्तिवानों का तथा गुज़र चुका है अगलों का उदाहरण।
9. और यदि आप प्रश्न करें उन से कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो अवश्य कहेंगे: उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली सब कुछ जानने वाले ने।

- وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝
 إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝
 وَإِنَّهُ فِي أُولَى الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلُّ حَكِيمٍ ۝
 أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝
 وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ۝
 وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝
 فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَى مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝
 وَلَئِنْ سَأَلْتُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

1 मूल पुस्तक से अभिप्राय लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है। जिस से सभी आकाशीय पुस्तकें अलग कर के अवतरित की गई हैं। सूरह बाकिआ में इसी को ((किताबे मक्नून)) कहा गया है। सूरह बुरूज में इसे ((लौहे महफूज़)) कहा गया है। सूरह शुअरा में कहा गया कि यह अगले लोगों की पुस्तक में है। सूरह ऑला में कहा गया है कि यह विषय पहली पुस्तकों में भी अंकित है। सारांश यह है कि कुर्आन के इन्कार करने का कोई कारण नहीं। तथा कुर्आन का इन्कार सभी पहली पुस्तकों का इन्कार करने के बराबर है।

2 अर्थात् मक्कावासियों से।

10. जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को पालना। और बनाये उस में तुम्हारे लिये मार्ग ताकि तुम मार्ग पा सको।^[1]
11. तथा जिस ने उतारा आकाश से जल एक विशेष मात्रा में। फिर जीवित कर दिया उस के द्वारा मुर्दा भूमी को। इसी प्रकार तुम (धरती से) निकाले जाओगे।
12. तथा जिस ने पैदा किये सब प्रकार के जोड़े, तथा बनाई तुम्हारे लिये नवकायें तथा पशु जिन पर तुम सवार होते हो।
13. ताकि तुम सवार हो उन के ऊपर, फिर याद करो अपने पालनहार के प्रदान को जब सवार हो जाओ उस पर और यह^[2] कहो: पवित्र है वह जिस ने वश में कर दिया हमारे लिये इस को। अन्यथा हम इसे वश में नहीं कर सकते थे।
14. तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
15. और बना लिया उन्होंने^[3] उस के भक्तों में से कुछ को उस का अंश। वास्तव में मनुष्य खुला कृतघ्न है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا
سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً وَقَدَّرْنَا فِيهِ الشُّجُرَ
بِهِ بَدَدَهُ مَبِيتًا كَذَلِكَ نُخْرِجُكُمْ ۝

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمُ مِنَ الْفَلَكَ
وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝

لِتَسْتَوِيَ عَلَى ظُهُورِهِمْ تَتَذَكَّرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا
اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا
هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ۝

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝

وَجَعَلُوا آلَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ
مُّبِينٌ ۝

1 एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये।

2 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऊँट पर सवार होते तो तीन बार: अल्लाहु अकबर कहते फिर यही आयत ((मुन्कलिबून)) तक पढ़ते और कुछ और प्रार्थना के शब्द कहते थे जो दुआओं की पुस्तकों में मिलेंगे। (सहीह मुस्लिम हदीस न०: 1342)

3 जैसे मक्का के मुशरिक लोग फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ मानते थे। और ईसाईयों ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र माना। और किसी ने आत्मा को प्रमात्मा तथा अवतारों को प्रभु बना दिया। और फिर उन्हें पूजने लगे।

16. क्या अल्लाह ने उस में से जो पैदा करता है, पुत्रियाँ बना ली है तथा तुम्हें विशेष कर दिया है पुत्रों के साथ?
17. जब कि उन में से किसी को शुभसूचना दी जाये उस (के जन्म लेने) की जिस का उस ने उदाहरण दिया है अत्यंत कृपाशील के लिये तो उस का मुख काला^[1] हो जाता है। और शोक से भर जाता है।
18. क्या (अल्लाह के लिये) वह है जिस का पालन-पोषण अभूषण में किया जाता है। तथा वह विवाद में खुल कर बात नहीं कर सकती?
19. और उन्होंने बना दिया फरिश्तों को जो अत्यंत कृपाशील के भक्त हैं पुत्रियाँ। क्या वह उपस्थित थे उन की उत्पत्ति के समय? लिख ली जायेगी उन की गवाही और उन से पूछ होगी।
20. तथा उन्होंने कहा कि यदि अत्यंत कृपाशील चाहता तो हम उन की इबादत नहीं करते। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वह केवल तीर तुच्छे चला रहे हैं।

أَمْ اتَّخَذَ مِنَّا مِثْلًا بَنَاتٍ ۚ إِنَّ أَصْفَكُمْ بِالْبَنِينَ ۝

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝

أَوْ مَن يَنْتَوِي إِلَى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا أَشْهَدُ وَآخَلَقَهُمْ سَكَنَ شَهِادَتُهُمْ وَيَسْأَلُونَ ۝

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝

1 इस्लाम से पूर्व यही दशा थी। कि यदि किसी के हाँ बच्ची जन्म लेती तो लज्जा के मारे उस का मुख काला हो जाता। और कुछ अरब के कबीले उसे जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। किन्तु इस्लाम ने उस को सम्मान दिया। तथा उस की रक्षा की। और उस के पालनपोषण को पुण्य कर्म घोषित किया। हदीस में है कि जो पुत्रियों के कारण दुख झेले और उन के साथ उपकार करे तो उस के लिये वे नरक से पर्दा बनेंगी। (सहीह बुखारी: 5995, सहीह मुस्लिम: 2629) आज भी कुछ पापी लोग गर्भ में बच्ची का पता लगते ही गर्भपात करा देते हैं। जिसको इस्लाम बहुत बड़ा अत्याचार समझता है।

21. क्या हम ने उन्हें प्रदान की है कोई पुस्तक इस से पहले, जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हुये हैं?^[1]
22. बल्कि यह कहते हैं कि हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।
23. तथा (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी बस्ती में कोई सावधान करने वाला परन्तु कहा उस के सुखी लोगों ने: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम निश्चय उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।^[2]
24. नबी ने कहा: क्या (तुम उन्हीं का अनुगमन करोगे) यद्यपि मैं लाया हूँ तुम्हारे पास उस से अधिक सीधा मार्ग जिस पर तुम ने पाया है अपने पूर्वजों को? तो उन्होंने कहा: हम जिस (धर्म) के साथ तुम भेजे गये हो उसे मानने वाले नहीं हैं।
25. अन्ततः हम ने बदला चुका लिया उन से। तो देखो कि कैसा रहा झुठलाने वालों का दुष्परिणाम।
26. तथा याद करो, जब कहा इबराहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति से: निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की बंदना तुम करते हो।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾

قُلْ أَوْ لَوْ كُنْتُمْ بِأَهْدَىٰ سَبِيلٍ مِّمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٢٤﴾

فَاسْتَقَمْنَا لَهُمْ سَبِيلَهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿٢٥﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾

- 1 अर्थात् कुर्आन से पहले की किसी ईश- पुस्तक में अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना की शिक्षा दी ही नहीं गई है कि वह कोई पुस्तक ला सकें।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि प्रत्येक युग के काफिर अपने पूर्वजों के अनुसरण के कारण अपने शिर्क और अंधविश्वास पर स्थित रहे।

27. उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है। वही मुझे राह दिखायेगा।

28. तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को^[1] अपनी संतान में ताकि वह (शिरक से) बचते रहें।

29. बल्कि मैं ने इन को तथा इन के बाप दादा को जीवन का सामान दिया। यहाँ तक कि आ गया उन के पास सत्य (कुर्आन) और एक खुला रसूल।^[2]

30. तथा जब आ गया उन के पास सत्य तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है तथा हम इसे मानने वाले नहीं हैं।

31. तथा उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारा^[3] गया यह कूर्आन दो बस्तियों में से किसी बड़े व्यक्ति पर?

32. क्या वही बाँटते^[4] हैं आप के पालनहार की दया? हम ने बाँटा है उन के बीच उन की जीविका को संसारिक जीवन में। तथा हम ने उच्च किया है उन में से एक

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۝

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سُحْرُؤُنَا ۝

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْغَرَبِيِّينَ عَظِيمٍ ۝

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا حِزْبًا ۖ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝

1 आयत 26 से 28 तक का भावार्थ यह है कि यदि तुम्हें अपने पूर्वजों ही का अनुगमन करना है तो अपने पूर्वज इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का अनुगमन करो। जो शिरक से विरक्त तथा एकेश्वरवादी थे। और अपनी संतान में एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा छोड़ गये ताकि लोग शिरक से बचते रहें।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

3 मक्का के काफिरों ने कहा कि यदि अल्लाह को रसूल ही भेजना था तो मक्का और ताइफ के नगरों में से किसी प्रधान व्यक्ति पर कुर्आन उतार देता। अब्दुल्लाह का अनाथ-निर्धन पुत्र मुहम्मद तो कदापि इस के योग्य नहीं है।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जैसे संसारिक धन-धान्य में लोगों की विभिन्न श्रेणियाँ बनाई हैं उसी प्रकार नबूवत और रिसालत, जो उस की दया है, उन को भी जिस के लिये चाहा प्रदान किया है।

को दूसरे पर कई श्रेणियाँ। ताकि एक-दूसरे से सेवा कार्य लें, तथा आप के पालनहार की दया^[1] उस से उत्तम है जिसे वह इकट्ठा कर रहे हैं।

33. और यदि यह बात न होती कि सभी लोग एक ही नीति पर हो जाते तो हम अवश्य बना देते उन के लिये जो कुफ़र करते हैं अत्यंत कृपाशील के साथ उन के घरों की छतें चाँदी की तथा सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं।

34. तथा उन के घरों के द्वार, और तख्त जिन पर वह तकिये लगाये^[2] रहते हैं।

35. तथा बना देते शोभा। नहीं है यह सब कुछ परन्तु संसारिक जीवन के सामान। तथा आखिरत^[3] (परलोक) आप के पालनहार के यहाँ केवल आज्ञाकारियों के लिये है।

36. और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अंधा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।

37. और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से। तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।

38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो यह कामना करेगा कि मेरे

وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُوقِتَهُمْ سُقُوطًا مِّنْ فَضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِيُوقِتَهُمْ أَبْوَابًا وَسُورًا عَلَيْهَا يُسْكِنُونَ ﴿٣٤﴾

وَزُخْرَفًا وَإِنْ كُلُّ ذَلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

وَمَن يَعْصِ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُفَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾

وَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ السَّبِيلِ وَيَحْبَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ يَبُنَىٰ وَبَيْنَكَ بَعْدَ

1 अर्थात परलोक में स्वर्ग सदाचारी भक्तों को मिलेगी।

2 अर्थात सब मायामोह में पड़ जाते।

3 भावार्थ यह है कि संसारिक धन-धान्य का अल्लाह के हाँ कोई महत्व नहीं है।

الْمَشْرِقَيْنِ فَيَنسُ الْقُرَيْنِ ۝

तथा तेरे (शैतान के) बीच पश्चिम
तथा पूर्व की दूरी होती। तू बुरा साथी है।

وَلَنْ يَنْفَعَكَ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنتُمْ فِي الْعَذَابِ
مُشْتَرِكُونَ ۝

39. (उन से कहा जायेगा): और तुम्हें
कदापि कोई लाभ नहीं होगा आज,
जब कि तुम ने अत्याचार कर लिया
है। वास्तव में तुम सब यातना में
साझी रहोगे।

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى وَمَنْ كَانَ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

40. तो (हे नबी!) क्या आप सुना लेंगे
बहरों को या सीधी राह दिखा देंगे
अंधों को तथा जो खुले कुपथ^[1] में
हों?

فَأَمَّا أَذْهَبَ بِكَ فَأَنَا مِنْهُمْ مُنْتَفِعُونَ ۝

41. फिर यदि हम आप को (संसार से) ले
जायें तो भी हम उन से बदला लेने
वाले हैं।

أَوْ زُرَّ بِكَ الْبَدَىٰ وَعَذَّبَهُ فَأَنَا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ ۝

42. अथवा आप को दिखा दें जिस
(यातना) का हम ने उन को वचन
दिया है तो निश्चय हम उन पर
सामर्थ्य रखने वाले हैं।

فَأَسْمِعْكَ بِأَلْفٍ أُوحِيَ إِلَيْكَ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ۝

43. तो (हे नबी!) आप दृढ़ता से पकड़े
रहें उसे जो हम आप की ओर वही
कर रहे हैं। वास्तव में आप सीधी राह
पर हैं।

وَأِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ۝

44. निश्चय यह (कुर्आन) आप के लिये
तथा आप की जाति के लिये एक
शिक्षा^[2] है। और जल्द ही तुम से
प्रश्न^[3] किया जायेगा।

1 अर्थ यह है कि जो सच्च को न सुने तथा दिल का अंधा हो तो आप के सीधी राह दिखाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

2 इस का पालन करने के संबन्ध में।

3 पहले नबियों से पूछने का अर्थ उन की पुस्तकों तथा शिक्षाओं में यह बात

45. तथा हे नबी! आप पूछ लें उन से जिन्हें हम ने भेजा है आप से पहले अपने रसूलों में से कि क्या हम ने बनाये हैं अत्यंत कृपाशील के अतिरिक्त वंदनीय जिन की वंदना की जाये?
46. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उस ने कहा: वास्तव में, मैं सर्वलोक के पालनहार का रसूल हूँ।
47. और जब वह उन के पास लाया हमारी निशानियाँ तो सहसा वह उन की हँसी उड़ाने लगे।
48. तथा हम उन को एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे। और हम ने पकड़ लिया उन्हें यातना में ताकि वह (ठट्ठा) से रुक जायें।
49. और उन्होंने कहा: हे जादूगर! प्रार्थना कर हमारे लिये अपने पालनहार से उस वचन के आधार पर जो तुझ से किया है। वास्तव में हम सीधी राह पर आ जायेंगे।
50. तो जैसे ही हम ने दूर किया उन से यातना को, तो वह सहसा वचन तोड़ने लगे।
51. तथा पुकारा फिरऔन ने अपनी जाति में। उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्या नहीं है मेरे लिये मिस्र का राज्य तथा यह नहरें जो वह

وَسْئَلُ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا
أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾

وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا
وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَأَعْلَاهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الشَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ
عِنْدَكَ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَمُتُونَ ﴿٥٠﴾

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ
مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

रही हैं मेरे नीचे से? तो क्या तुम देख नहीं रहे हो।

52. मैं अच्छा हूँ या वह जो अपमानित (हीन) है और खुल कर बोल भी नहीं सकता?

53. क्यों नहीं उतारे गये उस पर सोने के कंगन अथवा आये फरिश्ते उस के साथ पंक्ति बाँधे हुये?^[1]

54. तो उस ने झाँसा दे दिया अपनी जाति को और सब ने उस की बात मान ली। वास्तव में वह थे ही अवज्ञाकारी लोग।

55. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को डुबो दिया।

56. और बना दिया हम ने उन को गया गुज़रा और एक उदाहरण पश्चात के लोगों के लिये।

57. तथा जब दिया गया मर्यम के पुत्र का^[2] उदाहरण तो सहसा आप की जाति उस से प्रसन्न हो कर शोर मचाने लगी।

58. तथा मुश्रिकों ने कहा कि हमारे

أَمْ آخِرِينَ هَذَا الَّذِي هُوَ مِهْنٌ ۖ وَلَا يَكَادُ يَمِينٌ ۝

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسُورَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلِكَةُ مُقَرَّرِينَ ۝

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

فَجَعَلْنَاهُمْ سُلَاقًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ۝

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝

وَقَالُوا ۚ الْهَتَأَ أَخِيرُ أَمْرِهِمْ بِمَا ضُرِبُوا ۚ لَكَ الْإِحْدَالُ ۝

1 अर्थात यदि मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह का रसूल होता तो उस के पास राज्य, और हाथों में सोने के कंगन तथा उस की रक्षा के लिये फरिश्तों को उस के साथ रहना चाहिये था। जैसे मेरे पास राज्य, हाथों में सोने के कंगन तथा सुरक्षा के लिये सेना है।

2 आयत नं० 45 में कहा गया है कि पहले नबियों की शिक्षा पढ़ कर देखो कि क्या किसी ने यह आदेश दिया है कि अल्लाह अत्यंत कृपाशील के सिवा दूसरों की इबादत की जाये? इस पर मुश्रिकों ने कहा कि ईसा (अलैहिस्सलाम) की इबादत क्यों की जाती है? क्या हमारे पूज्य उन से कम है?

بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٩﴾

देवता अच्छे हैं या वे? उन्होंने नहीं दिया यह (उदाहरण) आप को परन्तु कुतर्क (झगड़ने) के लिये। बल्कि वह हैं ही बड़े झगड़ालू लोग।

59. नहीं है वह^[1] (ईसा) परन्तु एक भक्त (दास) जिस पर हम ने उपकार किया। तथा उसे इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बनाया।

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا
لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٥٩﴾

60. और यदि हम चाहते तो बना देते तुम्हारे बदले फरिश्ते धरती में, जो एक-दूसरे का स्थान लेते।

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ
يَخْلُقُونَ ﴿٦٠﴾

61. तथा वास्तव में वह (ईसा) एक बड़ा लक्षण^[2] है प्रलय का। अतः कदापि संदेह न करो प्रलय के विषय में। और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है।

وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنْ بِهَا وَاعْبُدْنِي
هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

62. तथा तुम्हें कदापि न रोक दे शैतान। निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُبِينٌ ﴿٦٢﴾

63. और जब आ गया ईसा खुली निशानियाँ ले कर तो कहा: मैं लाया हूँ तुम्हारे पास ज्ञान। और ताकि उजागर कर दूँ तुम्हारे लिये कुछ वह बातें जिन में तुम विभेद कर रहे हो। अतः अल्लाह से डरो और मेरा ही कहा मानो।

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ
بِالْحِكْمَةِ وَالْبَيِّنَاتِ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ ﴿٦٣﴾

1 इस आयत में बताया जा रहा है कि यह मुश्रिक, ईसा (अलैहिस्सलाम) के उदाहरण पर बड़ा शोर मचा रहे हैं। और उसे कुतर्क स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं। जब कि वह पूज्य नहीं, अल्लाह के दास हैं। जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया और इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बना दिया।

2 हदीस शरीफ में है आया है कि प्रलय की बड़ी दस निशानियों में से ईसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश से उतरना भी एक निशानी है। (सहीह मुस्लिम: 2901)

64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अतः उसी की वंदना (इबादत) करो यही सीधी राह है।

65. फिर विभेद कर लिया गिरोहों^[1] ने आपस में। तो विनाश है उन के लिये जिन्होंने अत्याचार किया दुःखदायी दिन की यातना से।

66. क्या वह बस इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रलय उन पर सहसा आ पड़े और उन्हें (उस का) संवेदन (भी) न हो?

67. सभी मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु हो जायेंगे आज्ञाकारियों के सिवा।

68. हे मेरे भक्तो! कोई भय नहीं है तुम पर आज। और न तुम उदासीन होगे।

69. जो ईमान लाये हमारी आयतों पर तथा आज्ञाकारी बन के रहे।

70. प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ। तुम्हें प्रसन्न रखा जायेगा।

71. फिरायी जायेंगी उन पर सोने की थालें तथा प्याले। और उस में वह सब कुछ होगा जिसे उन का मन चाहेगा और जिसे उन की आँखें देख कर आनन्द लेंगी। और तुम सब उस में सदैव रहोगे।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَأَعْبُدُوا اللَّهَ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ إِلَهِمْ ﴿٦٥﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾

الْأَخِلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾

يَعِيبَادُ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَآزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَكُنُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾

1 इस्राईली समुदायों में कुछ ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र, किसी ने प्रभु तथा किसी ने उसे तीन का तीसरा (तीन खुदाओं में से एक) कहा। केवल एक ही समुदाय ने उन्हें अल्लाह का भक्त तथा नबी माना।

72. और यह स्वर्ग है जिस के तुम उत्तराधिकारी बनाये गये हो अपने कर्मों के बदले जो तुम कर रहे थे।
73. तुम्हारे लिये इस में बहुत से मेवे हैं जिन में से तुम खाते रहोगे।
74. निःसंदेह अपराधी नरक की यातना में सदावासी होंगे।
75. उन से (यातना) हल्की नहीं की जायेगी तथा वे उस में निराश होंगे।
76. और हम ने अत्याचार नहीं किया उन पर, परन्तु वही अत्याचारी थे।
77. तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक!^[1] हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार। वह कहेगा: तुम्हें इसी दशा में रहना है।
78. (अब्लाह कहेगा): हम तुम्हारे पास सत्य^[2] लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।
79. क्या उन्होंने किसी बात का निर्णय कर लिया है^[3] तो हम भी निर्णय कर देंगे।^[4]
80. क्या वह समझते हैं की हम नहीं सुनते हैं उन की गुप्त बातों तथा प्रामर्श को? क्यों नहीं, बल्कि हमारे फ़रिश्ते उन के पास ही

- وَلَكُمْ الْجَنَّةُ الَّتِي أَدْرَيْتُمْوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾
- لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾
- إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾
- لَا يَفْتَرَعْنَهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾
- وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾
- وَنَادُوا إِلَيْكَ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ قَالَ إِنَّكُمْ مَكِيدُونَ ﴿٧٧﴾
- لَقَدْ جِئْتَكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿٧٨﴾
- أَمْ أَمْرُكُمْ أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾
- أَمْ يَحْسِبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

1 मालिक: नरक के अधिकारी फ़रिश्ते का नाम है।

2 अर्थात् नबियों द्वारा।

3 अर्थात् सत्य के इन्कार का।

4 अर्थात् उन्हें यातना देने का।

लिख रहे हैं।

81. (हे नबी!) आप उन से कह दें कि यदि अत्यंत कृपाशील (अल्लाह)की कोई संतान होती तो सब से पहले मैं उस का पुजारी होता।
82. पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं।
83. तो आप उन्हें छोड़ दें, वह वाद-विवाद तथा खेल-कूद करते रहें, यहाँ तक की अपने उस दिन से मिल जायें जिस से उन्हें डराया जा रहा है।
84. वही है जो आकाश में वंदनीय और धरती में वंदनीय है। और वही हिक्मत और ज्ञान वाला है।
85. शुभ है वह जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा जो कुछ दोनों के मध्य है। तथा उसी के पास प्रलय का ज्ञान है। और उसी की ओर तुम सब प्रत्यागत किये जाओगे।
86. तथा नहीं अधिकार रखते हैं जिन्हें वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त सिफारिश का। हाँ (सिफारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य^[1] की गवाही

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَبْدِينَ ۝

سُبْحَنَ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝

فَذَرَهُمْ خَوْضًا وَيُلْبُسًا حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهٌ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

وَتَبَرَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَالْيَوْمِ تُرْجَعُونَ ۝

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

1 सत्य से अभिप्राय धर्म-सूत्र ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। अर्थात् जो इसे जान बूझ कर स्वीकार करते हों तो शफाअत उन्हीं के लिये होगी। उन काफिरों के लिये नहीं जो मूर्तियों को पुकारते हैं। अथवा इस से अभिप्राय यह है कि सिफारिश का अधिकार उन को मिलेगा जिन्होंने सत्य को स्वीकार किया है। जैसे अम्बिया, धर्मात्मा तथा फरिश्तों को, न कि झूठे उपास्यों को जिन को मुश्रिक अपना सिफारिशी समझते हैं।

दें, और (उसे) जानते भी हों।

87. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं?^[1]

88. तथा रसूल की यह बात कि, हे मेरे पालनहार! यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

89. तो आप उन से विमुख हो जायें, तथा कह दें कि सलाम^[2] है। शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَلَّى يُؤْفَكُونَ ۝

وَقِيلَ لَهُ رَبِّ إِنَّا هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

فَاصْفَعْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह की उपासना से।

2 अर्थात् उन से न उलझें।